International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 2-11-2022, Accepted: 19-11-2022, Published: 05-12-2022
Volume 4, Issue 2, 2022, Page No. 12-14

प्रेम चंद के कथा–साहित्य में चित्रित शाश्वत समस्याएं

डॉ० पूनम भारद्वाज
अध्यक्ष, हिंदी–विभाग, आर्य कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हापुड़, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
प्रेमचंद जमीन से जुड़े एक ऐसे कथाकार थे। जिनको अपने समय और समाज पर गहरी पकड़ थी। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ कालजयी हैं। उनके साहित्य में उनके अपने जीवन के अनुभवों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। प्रेमचंद के कथा साहित्य में विभिन्न समस्याओं का चित्रण हुआ है। जिनमें मुख्य रूप से दहेज, बेमेल–विवाह, सौतेली माँ या बेटे की समस्या, विघटित परिवार, बाल–विवाह, विधवा–विवाह की समस्या, कृषक समस्या, गरीबों की उपेक्षा, वृद्धों की उपेक्षा, विवाह पूर्व युवक–युवती के साथ रहने की समस्या, शिक्षित नारी की विवाह के प्रति नफरत, गाँव की समस्या, दलित समस्या आदि का चित्रण प्रेमचंद के कथा साहित्य में देखने को मिलता है। सभी समस्याएं केवल प्रेमचंद के युग की ही नहीं है बल्कि आज भी उतनी ही गंभीर समस्याएं हैं। इस प्रकार प्रेमचंद के कथा साहित्य की सभी समस्याएं शाश्वत समस्याएं हैं।

मूल शब्दः समाज, समस्याएं, कहानियां, उपन्यास, शाश्वत, गरीबी, कृषक, विवाह, अमानवीय, जीवन

प्रेमचंद को उपन्यास सम्राट की उपाधि दी गई। उन्होंने उपन्यास को ही शीर्ष पर नहीं पहुंचाया बल्कि कहानियों के क्षेत्रों में भी उन्होंने बुलंदियों को छुआ है। उन्होंने कथा साहित्य में युगांतर स्थापित किया। उन्होंने लगभग 300 कहानियां लिखी। यह कहानियां मानसरोवर के 8 भाग और गुप्त धन के दो भाग में छपी हैं। उनकी कहानियों में जीवन के वैविध्य और व्यापकता के दर्शन होते हैं। प्रारंभिक कहानियों में आदर्शवाद, समाज सुधार एवं नैतिक मानवीय मूल्यों की प्रधानता है किंतु वे क्रमशः जीवन की वास्तविक और यथार्थ समस्याओं के चित्रण की ओर अग्रसर होते गए। उनकी कहानियों में भारत की मिट्टी की गंध विद्यमान है। यों तो वे ग्रामीण जीवन के कलाकार कहे जाते हैं किंतु उन्होंने कस्बाई जीवन, नगर और महानगरों के जीवन की भी उपेक्षा नहीं की है। उनकी कहानियाँ अपने समय की सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों का पूरा प्रतिनिधित्व करती हैं। उनकी सहानुभूति ग्रामीण किसानों, दलित जनता, शोषित मजदूरों और उपेक्षित नारियों के प्रति रही है। उनकी कहानियों में छोटे–छोटे पात्र और छोटी–छोटी घटनाएँ भी सजीव हो उठती हैं और अपना स्थायी प्रभाव छोड़ जाती हैं। वे किसी विचारधारा विशेष अथवा संगठन, जाति–धर्म आदि के प्रतिकूल नहीं थे, वे केवल आम आदमी के प्रति प्रतिबद्ध थे। अपने लेखन के प्रति प्रतिबद्ध थे, तभी वे इतना अधिक लिख पाए। अपनी अधिकांश कहानियों में प्रेमचंद उन चिरंतन मानवीय मूल्यों को उठाते हैं, जो हमारी संस्कृति की धरोहर हैं। कहानी चाहे 'क्षमा' हो, 'बड़े घर की बेटी हो' या 'प्रेम का उदय'। उनकी कहानियाँ कालजयी सिद्ध होंगी। इनमें 'कफन', 'पूस की रात', 'ठाकुर का कुआँ', 'सवा सेर गेहूँ', 'बूढ़ी काकी', 'ईदगाह', 'बड़े भाई साहब', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'नशा', 'अलग्योझा', 'परीक्षा', 'मंत्र', 'जुरमाना' ' 'मिस पद्मा' आदि प्रमुख हैं।

गरीबी आदमी को किस कदर अमानवीय बना देती है, प्रेम चंद की बेजोड़ कहानी 'कफन' इसका जीता जागता उदाहरण है। बाहर अलाव पर बैठे घीसू और माधव भीतर प्रसव वेदना से तड़पती माधव की पत्नी बुधिया की कोई खैर–खबर नहीं लेते। उसके मरने पर चंदे से इकट्ठे किए कफन के पैसों को शराब और खान–पान में खर्च करके मौज उड़ाते हैं। 'पूस की रात' गरीबी में पिसते लाखों किसानों की बेबसी की व्यथा को उजागर करती है। एक गरीब किसान हल्कू पूस की रात की ठंड में बिना किसी गर्म कपड़े के अपनी फसल की रखवाली करता है, फिर भी जरा–सी झपकी लगते ही नील गाय उसकी फसल को चट कर जाती है। बेबस हल्कू सोचता है– अब रात की ठंड में यहाँ सोना तो न पड़ेगा। उसके इस कथन में फसल नष्ट होने का दर्द, फसल की रखवाली के लिए सही यातना से कहीं ज्यादा महसूस किया जा सकता है। भारतीय पुलिस के विषय में आम धारणा अच्छी नहीं है किंतु प्रेमचंद ने 'नमक का दारोगा' कहानी में कर्त्तव्यनिष्ठ दरोगा वंशीधर की ईमानदारी के सम्मुख पंडित अलोपीदीन के रिश्वत में प्राप्त धन को पैरों तले कुचलते दिखलाया है। प्रेमचंद क्रांति के लिए व्यवस्था के खिलाफ नारे नहीं लगाते, झंडा नहीं उठाते, वे दर्द जगाकर क्रांति की भावना पैदा करते हैं।

'मिस पदमा' कहानी में पदमा उच्च शिक्षा प्राप्त करके वकालत करती है और विवाह को एक प्राकृतिक बंधन समझती है इसलिए वह स्वतंत्र रहने का निश्चय करती है। पदमा की ही तरह 'विश्वास' कहानी की मिस जोशी भी अविवाहित है मुंबई के गवर्नर मिस्टर जौहरी उसके इशारों पर चलते हैं । मिस जोशी कहती हैं, "मैं पुरुषों की भांति स्वतंत्र रहना चाहती थी। दांपत्य मेरी निगाह में तुच्छ वस्तु थी।"[1] वर्तमान में भी नवयुवतियां स्वावलंबी बनकर विवाह न करने का फैसला ले रही हैं। इस प्रकार प्रेमचंद जी के कथा साहित्य की समस्याएं शाश्वत हैं। 'मिस पद्मा' कहानी में पाश्चात्य आदर्शों से प्रभावित नवयुवती का चित्रण करते हुए प्रेमचंद ने प्रोफेसर प्रसाद से बिना विवाह किए, उसके साथ रहने वाली पद्मा की गर्भवती होने के बारे में लिखा है– "पदमा के लिए मातृत्व बड़ा ही अप्रिय प्रसंग था। उस पर चिंता मंडराती रहती थी। कभी–कभी वह भय से कांप उठती और पछताती थी।"[2] यह समस्या आज भी लिव–इन में रह रहे युवक–युवतियों की गंभीर समस्या है।

पारिवारिक विघटन की समस्या का चित्रण भी प्रेमचंद के कथा साहित्य में देखने को मिलता है। पारिवारिक विघटन का बुरा असर बच्चों पर पड़ता है। वे अपने ही रिश्तेदारों से नफरत करने लगते हैं। आपसी प्यार कम होता जाता है। 'अलग्योझा"[3] नामक कहानी में यही बात बताई गई है। 'बूढ़ी काकी''[4] की लड़की भी इसी पारिवारिक विघटन के कारण नाराज है। गाँव में पंचायत और उसके फैसलों का सम्मान करना हर नागरिक का कर्त्तव्य है। 'पंच परमेश्वर''[5] कहानी और 'गोदान' उपन्यास में यह बात स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं। 'जुरमाना' कहानी में अपने नियमों के प्रति अति सख्त दारोगा खैरातअलीखां को अल्लारखी की गरीबी और बेबसी पर पसीजते दिखाया है। 'नशा' में गरीब किंतु जमींदारों के शोषण के विरुद्ध खड़ा एक विद्यार्थी जब जमीदार के लड़के ईश्वरी के साथ कुछ दिन उसके गाँव में जमींदारी के ऐश भोगता है तो उसे भी अमीरी का नशा चढ़ने लगता है किंतु गाँव से लौटते–लौटते वह नशा उतरने लगता है। 'मंत्र' कहानी में डा० चड्ढा एक बूढ़े किसान भगत के मरणासन्न बीमार बच्चे को न देखकर गोल्फ खेलने के लिए चला जाता है किंतु वहीं किसान डा० चड्ढा के बच्चे को मंत्र और जड़ी बूटियों के बल पर नया जीवन देता है। 'बूढ़ी काकी' वृद्धजनों को होने वाली उपेक्षा की जीवंत कहानी है। वृद्धजनों की उपेक्षा तथा अन्य सभी समस्याएं आज भी समाज में यत्र तत्र देखने को मिल जाती हैं। इस प्रकार उनकी अधिकांश कहानियाँ शाश्वत समस्याओं पर आधारित हैं। दैनिक जीवन के सीधे–सादे क्रिया–कलापों पर बड़े सादा ढंग से लिखी गई है और इस सादगी में काफी विविधता है। उनकी भाषा आम आदमी की भाषा है जिसे पढ़े–से–पढ़ा भी और कम–से–कम पढ़ा भी बिना अतिरिक्त परिश्रम के आत्मसात कर सके। उसी आम भाषा में वे ऐसी सूक्तियाँ भी लिख गए, जो सदैव स्मरणीय रहेंगी। यथा– 'नमक का दारोगा' कहानी में मुंशी वंशीधर के पिता कहते हैं "मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते घटते लुप्त हो जाता है।"

वस्तुतः भाव और विचार में प्रेम चंद जैसा संतुलन बहुत कम साहित्यकारों में मिलता है। भारतीय समाज की विषमता का ऐसा संवेदनात्मक चित्रण उनसे पहले और बाद में किसी साहित्यकार ने नहीं किया। उनकी कहानियाँ कालजयी और विश्वस्तरीय कहानियाँ हैं। वे तभी अप्रासंगिक होंगी, जब देश और दुनिया से भूख, गरीबी, शोषण, अंधविश्वास, नारी उत्पीड़न, भ्रष्टाचार, सामाजिक आर्थिक वैषम्य दूर हो जाएगा।

प्रेम चंद ने एक दर्जन से अधिक उपन्यासों की रचना की। उनके प्रारंभिक उपन्यास– प्रेमा, रूठी रानी, कृष्ण, वरदान, प्रतिज्ञा आदि हैं, ये उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में लिखे गए उपन्यासों से बहुत भिन्न नहीं है किंतु सेवा सदन, प्रेमाश्रम, निर्मला, रंगभूमि, काया–कल्प, गबन, कर्मभूमि और गोदान में निरंतर आदर्श से आदर्शोन्मुख यथार्थवाद और यथार्थ की ओर विकसित होते गए। प्रेम चंद अपने अंतिम समय में 'मंगल सूत्र' लिख रहे थे, जो पूरा नहीं हो सका। प्रेमचंद प्रधानतः निम्न मध्यम वर्ग के उपन्यासकार है किंतु उनको संवेदना व्यापक होकर उच्च वर्ग को भी अपने भीतर समेट लेती है। उनका जन्म कृषक परिवार में हुआ था। भारतीय किसान के जीवन और समस्याओं को उन्होंने निकट से देखा ही नहीं था, भोगा भी था। इसी कारण कृषक वर्ग के प्रति उनकी सहानुभूति थी। उनके 'प्रेमाश्रम', 'कर्मभूमि' एवं 'गोदान' में कृषक की विविध समस्याओं को अलग–अलग ढंग से पेश किया गया है। 'प्रेमाश्रम' और 'रंगभूमि' में उन्होंने दिखाया है कि किसान को भूमि से कितनी आत्मीयता होती है। उपन्यासों और अनेक कहानियों में उन्होंने बताया है कि हमको, जमींदार, साहूकार, व्यापारी, सरकारी अधिकारी किस प्रकार लूटते हैं और हमारा शोषण करते हैं।

'निर्मला' में प्रेमचंद ने दहेज की समस्या का यथार्थ रूप में वर्णन किया है। 'निर्मला' के लिए वर खोजने को मोटेराम शास्त्री को बहुत दौड़ना पड़ा क्योंकि निर्मला की मां कल्याणी के पास पर्याप्त धन नहीं था। वैवाहिक संबंध निश्चित करते समय धन को प्रमुखता दी जाती है, कन्या के रूप गुण को नहीं। प्रेमचंद इस संबंध में व्यंग करते हुए लिखते हैं–

"वह (निर्मला) रूपवती है, गुणशील है, चतुर है, कुलीन है तो हुआ करे। दहेज हो तो सारे दोष गुण हैं। गुणों का कोई मूल्य नहीं, केवल दहेज का मूल्य है।"[6] प्रेमचंद ने सेवासदन', 'निर्मला' उपन्याओं में दहेज के अभाव में अयोग्य पात्रों के गले मढ़ दी जाने वाली नारी का वर्णन किया है। 'सेवासदन' की सुमन का गजाधर प्रसाद से और 'निर्मला' का मुंशी तोताराम से बेमेल विवाह हो जाता है। यह दोनों ही बेमेल विवाह दहेज की कुप्रथा के कारण हुए हैं। सुमन और गजाधर में आयु का अंतर तो है ही, उनका स्वभाव भी एक–दूसरे के बिल्कुल विपरीत है। अपने पिता के यहां सुख–सुविधाओं में पली सुमन को अच्छा खाना और पहनने की आदत है लेकिन सुमन का पति कृपण स्वभाव का है। इस कारण वह खुश नहीं रह पाती है। यह समस्या आज भी समाज में देखने को मिल जाती है।

40 वर्ष के मुंशी तोताराम से व्याही निर्मला की समस्या भी कुछ ऐसी ही है। तोताराम को अपनी पहली पत्नी से तीन पुत्र हैं। निर्मला को मुंशी तोताराम से हंसने–बोलने में संकोच का अनुभव होता है। इसका कारण बताते हुए प्रेमचंद लिखते हैं– "अब तक ऐसा ही एक आदमी उसका पिता था। जिसके सामने वह सिर झुकाकर देह चुराकर निकलती थी। अब उनकी अवस्था का एक आदमी उसका पति था। वह उसे प्रेम की वस्तु नहीं सम्मान की वस्तु समझती थी। उनसे भागती फिरती, उनको देखते ही उसकी प्रफुल्लता पलायन कर जाती थी।"[7] प्रेमा उपन्यास में अमृतराय, विधवा पूर्णा से विवाह करने का निश्चय करते हैं। जिससे शहर में हलचल मच जाती है। लोगों को विश्वास ही नहीं होता कि "वे इतनी मान मर्यादा के रईस होकर ऐसा नीच कर्म करेंगे।"[8] कट्टर हिंदुओं का निश्चय है कि वह इस विवाह को नहीं होने देंगे, दूसरी ओर समाज सुधारक इस विवाह का पक्ष लेते हैं। आज भी किसी युवक द्वारा विधवा से विवाह करने पर लोग इसी तरह से बातें बनाते हैं।

प्रेमचंद ने सामाजिक बंधनों में तड़पती नारी को मुक्ति का मंत्र दिया। वर्ण व्यवस्था में संत्रस्त दलित वर्ग की वेदना को वाणी दी समाज को विधवा विवाह और अंतर्जातीय विवाहों के लिए प्रेरित किया। आज इन सब विषयों पर लिखना आसान लग सकता है, किंतु जब प्रेमचंद ने लिखा, तब वह बहुत कठिन काम था। प्रेमचंद के कई उपन्यासों के अंत में हृदय परिवर्तन होता है। उनकी दृष्टि में बुरा आदमी भी बिल्कुल बुरा नहीं होता। उसमें कहीं देवता भी छिपा रहता है। वे पाप से घृणा करते हैं पापी से नहीं। अपने दुष्चरित्र पात्रों को भी भरपूर सहानुभूति देते हैं और उन्हें सुधार का पूरा अवसर भी देते हैं। यहां वे गांधी से प्रभावित दिखाई देते हैं। जब गरीब किसान और मजदूर का शोषण करने वाले तंत्र के सम्मुख वे तनकर खड़े होते हैं अथवा उसके प्रति असंतोष प्रकट करते हैं तो वे मार्क्स से प्रभावित प्रतीत होते हैं। वे पग–पग पर सामाजिक व आर्थिक विषमता और सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष करते हैं। इस प्रकार उनके लेखन में गांधी और मार्क्स दोनों घुलमिल गए हैं। जाति–धर्म–संप्रदाय के भेदभाव से दूर वे स्वामी दयानंद के भी निकट प्रतीत होते हैं।

प्रेमचंद में भाषा के प्रति जैसा खुलापन था, जैसी उनकी पकड़ थी, वैसी किसी और में देखने को नहीं मिलती। वह अनपढ़ और पढ़े लिखे दोनों के लिए सुगम थी। उनकी भाषा राष्ट्र भाषा हिंदी का प्रतिमान प्रस्तुत करती है। प्रेमचंद का विरोध भी कम नहीं हुआ। किसी ने उन्हें आधुनिक चेतना से कटा हुआ बताया तो किसी ने उन्हें सांप्रदायिक सिद्ध किया किंतु जितना अधिक उनका विरोध होता गया, प्रेमचंद की गरिमा और यश उतना ही बढ़ता गया। जब तक हमारे समाज में भूख की समस्या है, जात–पात, धर्म और सांप्रदायिकता की भावना विद्यमान है, सामाजिक विषमता है, गरीबी है, दहेज है, रिश्वत है, भ्रष्टाचार है, दलित वर्ग और पिछड़े वर्गों के प्रति अन्याय है, नारी का उत्पीड़न है, विधवा विवाह में रुकावटें हैं य तब तक प्रेमचंद अप्रासंगिक नहीं हो सकते क्योंकि उनके साहित्य की सभी समस्याएं शाश्वत समस्याएं हैं।

संदर्भ सूची

1. विश्वास, मानसरोवर भाग–3, सरस्वती प्रेस बनारस, पृ०15
2. मानसरोवर, भाग 2, सरस्वती प्रेस बनारस, पृ० 96
3. मानसरोवर, प्रथम खंड, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, संस्करण 2006, पृ० 13
4. मानसरोवर, अष्टम खंड, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, संस्करण 2006, पृ. 131
5. मानसरोवर, अष्टम खंड, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, संस्करण 2006, पृ० 133
6. निर्मला, प्रेमचंद्र, सरस्वती प्रेस बनारस, पृ० 55
7. निर्मला, प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस बनारस, पृ० 59
8. प्रेमा, मंगलाचरण, अमृतराय, हंस प्रकाशन इलाहाबाद, पृ० 308